अनुवाद

मैं सब प्राणियों के हृदय में बैठा हूँ और मुझसे ही स्मृति, ज्ञान और विस्मृति होती है; सब वेदों से एकमात्र मैं ही जानने योग्य हूँ तथा वेदान्त का रचयिता और वेदों को जानने वाला भी मैं ही हूँ।।१५।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् परमात्मा के रूप में प्राणीमात्र के हृदय में विराजमान हैं; वही सब क्रियाओं के प्रेरक हैं। देहान्तर के साथ जीवात्मा को अपने पूर्व जीवन की पूर्ण विस्मृति हो जाती है। अतएव उसे उन्हीं परमेश्वर की आज्ञानुसार कर्म करना है, जो उसके सम्पूर्ण कृत्यों के साक्षी हैं। वह पूर्वकर्म के अनुसार कार्य प्रारम्भ करता है, जिसके लिए श्रीभगवान् उसे पर्याप्त ज्ञान और स्मृति देते हैं। इसके अलावा, उसे पूर्वजन्म की विस्मृति हो जाती है। अस्तु, श्रीभगवान् सर्वव्यापक ही नहीं हैं, बल्कि प्राणीमात्र के हृदय में केन्द्रित भी हैं। वे सबको कर्मानुसार यथायोग्य फल देते हैं। निर्विशेष ब्रह्म, परमात्मा और भगवान्—इन तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त वे वेदावतार के रूप में भी आराध्य हैं। वेद लोगों के जीवन को उस सन्मार्ग पर लगाते हैं, जिससे वे अपने घर—भगवद्धाम को लौट जायें। वेद भगवान् श्रीकृष्ण के ज्ञान से परिपूर्ण हैं और श्रीकृष्ण ने ही व्यासदेव के अवतार में वेदान्तसूत्र का संकलन किया है। श्रीव्यासदेव ने स्वयं श्रीमद्भागवत के रूप में वेदान्तसूत्र के प्रामाणिक भाष्य का प्रणयन भी किया; अतः श्रीमद्भागवत से वेदान्तसूत्र के सच्चे तात्पर्य का बोध हो सकता है। यह श्रीभगवान् की पूर्णता ही है कि वे ही अन्न देने वाले हैं, वे ही पाचन करने वाले, जीव के साक्षी हैं और बद्धजीव की मुक्ति के लिए वेदों और गीतागायक श्रीकृष्ण के रूप में ही वे उसे ज्ञान प्रदान करते हैं। अतएव वे मंगलमय और कृपामय प्रभु ही जीव के आराध्य हैं।

अन्तःप्रविष्टः शास्ता जनानाम्। अपने देह को त्यागते ही जीव को विस्मृति हो जाती है; परन्तु देहान्तर करने पर अन्तर्यामी परमेश्वर की प्रेरणा से वह फिर कर्म करने लगता है। श्रीभगवान् उसे बुद्धि देते हैं, जिससे वह पूर्वजन्म के अपूर्ण कर्म में फिर प्रवृत्त हो जाता है। इस प्रकार अन्तर्यामी श्रीपरमेश्वर के निर्देश के अनुसार जीव संसार में सुख-दुःख ही नहीं भोगता; उनसे वैदिक ज्ञान को ग्रहण करने का अवसर भी उसे मिलता है। यदि कोई निश्छल भाव से वैदिक ज्ञान को जानना चाहे, तो श्रीकृष्ण उसे पर्याप्त बुद्धि अवश्य देंगे। श्रीकृष्ण ने वैदिक ज्ञान को वस्तुतः इसीलिए प्रकट किया है, क्योंकि जीव को निजी रूप में श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानने की आवश्यकता है। वैदिक श्रुति का प्रमाण है—**योऽसौ सर्वैर्वेदैर्गीयते**, चारों वेद, वेदान्तसूत्र, उपनिषद्, पुराण आदि सम्पूर्ण वैदिक शास्त्रों में एकमात्र श्रीभगवान् की पावन कीर्ति का गान हुआ है। श्रीभगवान् की प्राप्ति वैदिक कर्मानुष्ठान, वेदान्त-वार्ता, और भक्तियोग के द्वारा उनकी आराधना करने से होती है। अतएव सम्पूर्ण वेदों का एकमात्र लक्ष्य श्रीकृष्ण को जानना है। ये वेद हमें श्रीकृष्ण के तत्त्व को जानने का